आचार्य तुलसी की 13वीं पुण्यतिथि पर समारोह आयोजित

''आचार्य तुलसी को वर्तमान समस्या के समाधानकर्त्ता के रूप में याद करें''

- आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 10 जून।

अणुव्रत के प्रवर्तक आचार्य तुलसी की पुण्य तिथि पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में उत्तराखण्ड के राज्यपाल बी.एल. जोशी विशेष रूप से उपस्थित हुए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि आज पूरा विश्व आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा है और जिन कठिनाइयों का अनुभव कर रहा है उनका अगर समाधान हो सकता है तो संयम, व्रत, सीमाकरण के द्वारा ही हो सकता है। जब तक असीम भोग चलेगा संयम नहीं होगा तब तक समाधान नहीं होगा।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आचार्य तुलसी को हम याद करें तो एक वर्तमान की समस्या के समाधानकर्त्ता के रूप में याद करें। आचार्य तुलसी ने जो सूत्र, जो पथ दिया और जो व्रत दिये वे आज बहुत जरूरी है। मैं मानता हूं कि किसी दल का बहुमत हो या सत्ता हो हिन्दुस्तान में हो या बाहर हो कहीं भी हो जब तक संयम, सीमाकरण और भूख ये तथ्य सामने नहीं रहेंगे विश्व का कोई कल्याण नहीं होगा इस सच्चाई को सामने रखकर हम आचार्य तुलसी की स्मृति करें तो यह हमारा स्मृति दिवस सबके लिए पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी बनेगा। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस अवसर पर अपने द्वारा रचित नवीन गीत की सस्वर प्रस्तुति दी।

उत्तराखण्ड के राज्यपाल बी.एल. जोशी ने आचार्य तुलसी के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी का जीवन एक विलक्षण जीवन था। आचार्य तुलसी ने इसी लाडनूं की भूमि पर जन्म लिया। इसी तपोभूमि के वातावरण में मैंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। आचार्य तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ के 9वें आचार्य के रूप में अणुव्रत का संदेश दिया। उन्होंने धर्म को नये रूप में परिभाषित किया। धर्म को जीवन से जोड़ा। अपना जीवन उन आदर्शों के आधार पर जीया और वह आदर्श प्रस्तुत किये जो धारण करने योग्य है। व्यक्ति की जीवन शैली में उन्होंने उन पक्षों का समावेश किया। जो जीवन को उदात बनाते हैं, जीवन को उस रास्ते पर ले जाते हैं जहां जाना श्रेयस्कर है और जहां जाने से अपने अहंकार का, दोषों का शमन होता है।

राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण मानवीय मूल्यों के उत्थान के महान उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आचार्य तुलसी ने 1949 में महान अणुव्रत आंदोलन का बिगुल बजाया था। अणुव्रत एक मानसिक बदलाव की प्रक्रिया है और धर्म के रूढ़िवाद से हटकर है, जहां मनुष्य सूक्ष्म के स्तर पर बदलाव का प्रयास करता है। मैं जानता हूं कि तेरापंथ धर्मसंघ रूढिवाद से हटकर चल रहा है, वहां यह प्रयास हो रहा है और आचार्य महाप्रज्ञ ने हमारे पूर्व राष्ट्रपति के साथ उनके राष्ट्रपति पद के समय भी और आज भी महाप्रज्ञजी ने जो धर्म की नींव जो सर्वमान्य परिभाषा है, धर्म को उन विचारों और तत्त्वों से जोड़ने का प्रयास है कि वह सर्वमान्य हो सके। एक ऐसा धर्म विकसित हो सके जो सर्वमान्य हो। जो जीवन की पद्धति से संबंधित हो। ऐसे नियम और अवधारणाएं उपस्थित कर सकें जिन्हें धारण करके मनुश्य अपने आपको आगे ले जा सके इन सबके लिए आज आचार्य महाप्रज्ञजी प्रयासरत है और यह हमारा सौभाग्य है कि वह आज इस आंदोलन के प्रवर्तक है इसके अधिष्ठाता हैं और उसको आगे बढ़ा रहे हैं।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि हमारे जीवन में ऐसे क्षण भी आ जाते हैं जो अवांछनीय होते हैं अनभिष्ट होते हैं और जीवन में वियोग और कष्ट का अनुभव भी हो जाता है। विश्वविद्यालय के बारे में भी आचार्य तुलसी ने कितना सोचा और कितना बड़ा काम किया और अपनी विद्यमानता में आचार्य महाप्रज्ञ जैसा महान व्यक्तित्व प्रदान कर दिया इस महान व्यक्तित्व के अवदान के प्रति भी हम आचार्य तुलसी के प्रति बार-बार औतज्ञ हैं। इस व्यक्तित्व की छत्रछाया में हम लंबे काल तक कार्य करते रहें। आचार्य तुलसी के सपनों को यथासंभव पूर्ण करने का प्रयास करें और आचार्य महाप्रज्ञ के जो सपने हैं उनको भी पूर्ण करने का प्रयास करें और अच्छा कार्य करते हुए आगे बढ़ते रहें।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और कर्त्तत्व के अनछुए पहलू अनेक हैं। आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का समन्वित रूप था वे किस्मत के धनी पौरूष के पुजारी थे भाग्य ने कदम -कदम पर उनका साथ दिया उन्होंने कभी भी पुरुषार्थ को, श्रम को छोड़ा नहीं। वे चलते रहे और यही कारण है कि देश के अनेक चिंतनशील लोग, प्रबुद्ध लोग चाहते थे कि आचार्य तुलसी केवल अपने धर्मसंघ का ही नेतृत्व नहीं करे, धर्मसंघ की सीमाओं से मुक्त होकर पूरे आध्यात्मिक जगत का नेतृत्व करे, देश, विश्व का नेतृत्व करे और इस संबंध में अनेक लोगों ने समय-समय पर अपनी भावनाएं आचार्य तुलसी के समक्ष प्रस्तुत की। आचार्य तुलसी बरारबर चिंतन करते रहते थे कि संघ और समाज का विकास कैसे हो और राष्ट्रीय चरित्र उन्नत कैसे बने?

इस अवसर पर साध्वी जिनप्रभा, साध्वी शुभप्रभा, मुनि सुखलाल, जैन विश्व भारती की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा, समणी सत्यप्रज्ञा ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल, समणी मृदुप्रज्ञा, मुनि राजकुमार, साध्वी संगीतप्रभा ने भावपूर्ण गीतिका के द्वारा भावांजलि प्रस्तुत की।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए उत्तराखण्ड के राज्यपाल बी.एल जोशी को प्रतिक चिन्ह व मांगीलाल सेठिया, स्थानीय सभा के अध्यक्ष कमल बैद ने साहित्य भेंट कर स्वागत किया।

नवीन औतियों का विमोचन

समारोह में शासन गौरव मुनि बुद्धमल के द्वारा लिखी गई नवीन औति तेरापंथ इतिहास का चतुर्थ खण्ड, आचार्य जीवन दिग्दर्शन एवं चिद्विलास का विमोचन आचार्य महाप्रज्ञ के द्वारा हुआ। तेरापंथ इतिहास का सम्पादन मुनि सुमेरमल 'सुदर्शन', आचार्य जीवन दिग्दर्शन का सम्पादन शासन गौरव मुनि मधुकर ने, चिद्विलास का सम्पादन मुनि राजेन्द्रकुमार ने किया। इस औतियों को मुनि राजेन्द्र कुमार, मुनि धनंजय कुमार, मुनि जम्बूकुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट किया।